वर्ष-2; अंक-10 अक्टूबर 2018

जे 7 श्रीरामनगर रायपुर (छ.ग.)

आर.एन.आई पंजीकरण क्रमांक

CHHHIN/2017/72506

# किलोल

संपादक - डा. आलोक शुक्ला
सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -
राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा , शेख अजहरुद्दीन

प्यारे बच्चों,

आपके प्यार से किलोल लगातार प्रगति कर रहा है. इस अंक में हमें फिर से बहुत सी रचनाएं प्राप्त हुई हैं. सभी रचनाएं बहुत अच्छी हैं, पर स्थानाभाव के कारण कुछ रचनाएं हम प्रकाशित नहीं कर पा रहे हैं. हमारा अनुरोध है कि आप अपना यह प्यार बनाए रखें और अपनी रचनाएं हमें भेजते रहें. हम लागातार अधिक से अधिक रचनाएं प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे. इस बार अंग्रेज़ी सीखने के लिये हम हिन्दी और अंग्रेज़ी के मुहावरे एक साथ दे रहे हैं. कहानियों में भी अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग हमने जारी रखा है. बच्चों के बनाये अनेक चित्र भी हमें मिले हैं, जिन्हें प्रकाशित करके हमें खुशी हो रही है. शिक्षकों से अनुरोध है कि बच्चों के बनाये चित्र और कहानियां आदि भेजते समय उनका नाम अवश्य भेजें. इस अंक में हमने एक पहली बार एक गीत नाटिका भी प्रकाशित की है जिसे स्नेहलता जी ने लिखा है. अच्छे शिक्षकों की इस प्रकार की नवाचारी गतिविधियां प्रकाशित करके हमें हमेशा खुशी मिलती है. हमेशा की तरह किलोल http://alokshukla.com/Books/BookForm.aspx?Mag=Kilol पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है.

आलोक शुक्ला

## Lazy कौआ और चालक Fox

लेखक - अजय कुमार कोशले

एक banyan के पेड़ पर एक आलसी crow रहता था. वह इतना lazy था कि जब उसके सारे friends भोजन की तलाश में निकल पड़ते थे तब भी वह crow पेड़ पर सोया रहता था. जब sunrise होता था तभी वह food की तलाश में उड़ता था. Today भी उसने ऐसा ही किया. कुछ देर fly करने के बाद वह थक कर एक house के पास बैठ गया. इस house में एक old woman रहती थी. वह बड़ा बना रही थी. बड़ा देखकर कौए का मन ललचा गया. कौआ बुढ़िया का ध्यान हटने की प्रतीक्षा करने लगा. Suddenly कौए की नज़र एक दूसरे कौए पर पड़ी जो एक pole पर बंधा हुआ था. बुढ़िया ने कौए से कहा - "भाग जाओ नही तो तुम्हे भी बांध दूंगी." कौआ डर कर घर के back में चल गया. वहां से भी उसे बड़ा दिखाई दे रहा था.

कुछ देर में बुढ़िया व्यस्त हो गई. उसका ध्यान हट गया. मोका पाकर कौआ बड़ा लेकर उड़ गया और एक पेड़ पर जाकर बैठ गया. तभी बड़े की smell पाकर एक fox वहां आ गया. लोमड़ी ने देखा कि कौआ बड़े को पकड़ कर बैठा है. लोमड़ी को एक plan सूझा. वह कौऐ से बोला - "कौआ भाई मैने सुना है आप बहुत मीठा गाते हो. जंगल मे सभी आपकी तारीफ करते हैं. एक बार sing करके मुझे कोई song सुना दो. कौआ लोमड़ी के झांसे में आ गया. उसने गाना शुरू कर दिया - कांव... कांव... कांव.... बड़ा उसके मुंह से गिर गया. लोमड़ी बड़ा खाकर happy हो गया और कौआ hungry ही रह गया.

Moral of the story - आलस मत करो और किसी के बहकावे में मत आओ.

**Word Meaning** - Lazy - आलसी, banyan - बरगद, crow - कौआ, friend - मित्र, sunrise- सूर्योदय, today - आज, fly - उड़ना, house - घर, old woman - बूढ़ी महिला, pole - खंबा, suddenly - अचानक, back - पीछे, smell - महक, fox - लोमड़ी, plan - योजना, sing - गाओ, गाना, song - गाना, happy - खुश, hungry - भूखा.

## गीत नाटिका - बाल श्रम का शिक्षा पर होने वाला दुष्प्रभाव

लेखिका - श्रीमती स्नेहलता "स्नेह"

पात्र- शिक्षिका स्नेह मैम, छात्र-(समीर, शंकर) छात्रा-रौशनी

**शिक्षिका स्नेह मैम**

हाय,फिर उपस्थिति कम

इसी बात का मुझको गम

क्यो नहीं आया रामू आज?

उसको क्या था ऐसा काज?

आओगे गर रोज स्कूल

जीवन पथ पर मिलेंगे फूल

**<u>छात्रा रौशनी</u>**

रामू के पापा बीमार

मम्मी भी उसकी लाचार

करता लोगों के घर काम

और चुकाता दवा का दाम

गायों को भी वही चराता है

बेटे का है फ़र्ज निभाता है

**<u>छात्र समीर</u>**

शंकर भी रोज ना आता है

बस रोपा लगाने जाता है

मैने भी कहा चलो स्कूल

शिक्षा है जीवन का मूल

**<u>छात्र शंकर</u>**

मेरे कंधों पर है बोझ

बाबा पीते दारू रोज

मेरे घर का ये महौल

शिक्षा का नहीं है मोल

सुन लो मेरे प्यारे मित्र

दुनिया मेरी बड़ी विचित्र

मैं बेबस नन्हा मजदूर

इसीलिए हूँ स्कूल से दूर

शिक्षिका स्नेह मैम - छात्रों की दशा सुनकर आँखों में आँसू भर आते हैं फिर बच्चो को समझाते हुए कहती है

सुन लो बच्चो पते की बात

बाल श्रम तो है अपराध

शिक्षा को बनाओ तलवार

करो गरीबी पे तुम वार

फर्ज अपना निभाना तुम

प्रतिदिन शाला आना तुम

पढ़ना भी है जरूरी काम

इसी से होगा रौशन नाम

शिक्षा बच्चों का अधिकार

शिक्षा जीवन का आधार

# The Crooked Tree

Author - Dilkesh Madhukar

Once there was a tree whose branches where crooked. It lived in a dense forest where all trees were straight and tall. Their trunks were broad and in good shape.

The crooked tree was sad. He thought "How ugly I am! All the others are straight and have nice shape. I alone have a crooked trunk." One day a woodcutter came there. He looked around and said "I will cut all trees here except that crooked here. The crooked three is of no use to me. The woodcutter cut away all other trees. Now the crooked tree was happy and thankful to the Lord for creating it with crooked branch.

Moral - "We should be happy with whatever we have."

## Difficult words with meaning

crooked - टेढ़ा मेढ़ा, branches - शाखाएं, dense – घना, forest – जंगल, straight- सीधा, broad- चौड़ा, trunk- तना, shape- आकार, Ugly- कुरूप, alone – अकेला, woodcutter- लकड़हारा, around - चारों ओर, except – अलावा, Lord- भगवान, create- बनाना

# दस का दम

लेखक - दिलकेश मधुकर

एक राजा अपनी प्रजा से उनकी फसल का अधिकांश हिस्सा अपने राजसी गोदाम में जमा कर लेता था. कई साल की अच्छी फसल के बाद अचानक एक साल अकाल पड़ गया. लोग राजा से चावल मांगने गए. राजा ने चावल देने से इंकार कर दिया.

एक दिन राजा ने अपने मंत्रियों को दावत पर बुलया. दावत के लिए गोदाम से 2 बोरी चावल हाथी पर लादकर राजमहल लाए जा रहे थे. रास्ते में आशा नाम की एक लड़की ने बोरे के एक छेद में से गिर रहे चावल को अपनी चुनरी में इकट्ठा कर लिया. राजा के महल के दरवाजे पर खड़ा सिपाही उसे देखकर चिल्लाया - "रुक जाओ! तुम चावल चुरा कर कहां ले जा रही हो?" आशा बोली- "मैं चोरी नहीं कर रही हूं. यह चावल तो एक बोरे में से गिर रहा था. मैं उसे राजा को लौटाने आई हूं."

राजा ने उसको पास बुलाकर पूरी बात सुनी और कहा- "मैं तुम्हें इनाम देना चाहता हूं. तुम जो मांगोगी, तुम्हें मिलेगा." आशा बोली- "मुझे चावल के 10 दाने दीजिए." राजा बोला- "सिर्फ 10 दाने! मैं तुम्हें कोई बड़ा इनाम देना चाहता हूं."

आशा बोली- "तो ठीक है, आज आप मुझे चावल के 10 दाने दें. फिर आप 10 दिन तक हर रोज इसके 10 गुना दाने देना. राजा ने कहा- "ठीक है, मिल जाएगा."

पहले दिन 10 दाने, दूसरे दिन 100, तीसरे दिन 1000, चौथे दिन 10000 दाने दिए गए. ऐसे करते-करते नवें दिन एक अरब दाने हो गए. इससे दो गोदामों का सारा चावल खाली हो गया. राजा के पास अब देने को और चावल बचा ही नहीं था. राजा ने हताश होकर आशा से माफी मांगी और कहा - ‘‘मैं अपना वचन पूरा नहीं कर सकता. अब मेरे पास तुम्हें देने के लिए कुछ नहीं बचा है.

आशा बोली - "मैं इसे सभी भूखे लोगों में बांट दूंगी और आपको भी आपकी जरूरत के अनुसार एक बोरा चावल दूंगी. राजा समझ गया कि हमें स्वार्थी और लालची नहीं होना चाहिए.

## चित्र कविताएं

लेखिका - प्रियंका कुर्रे

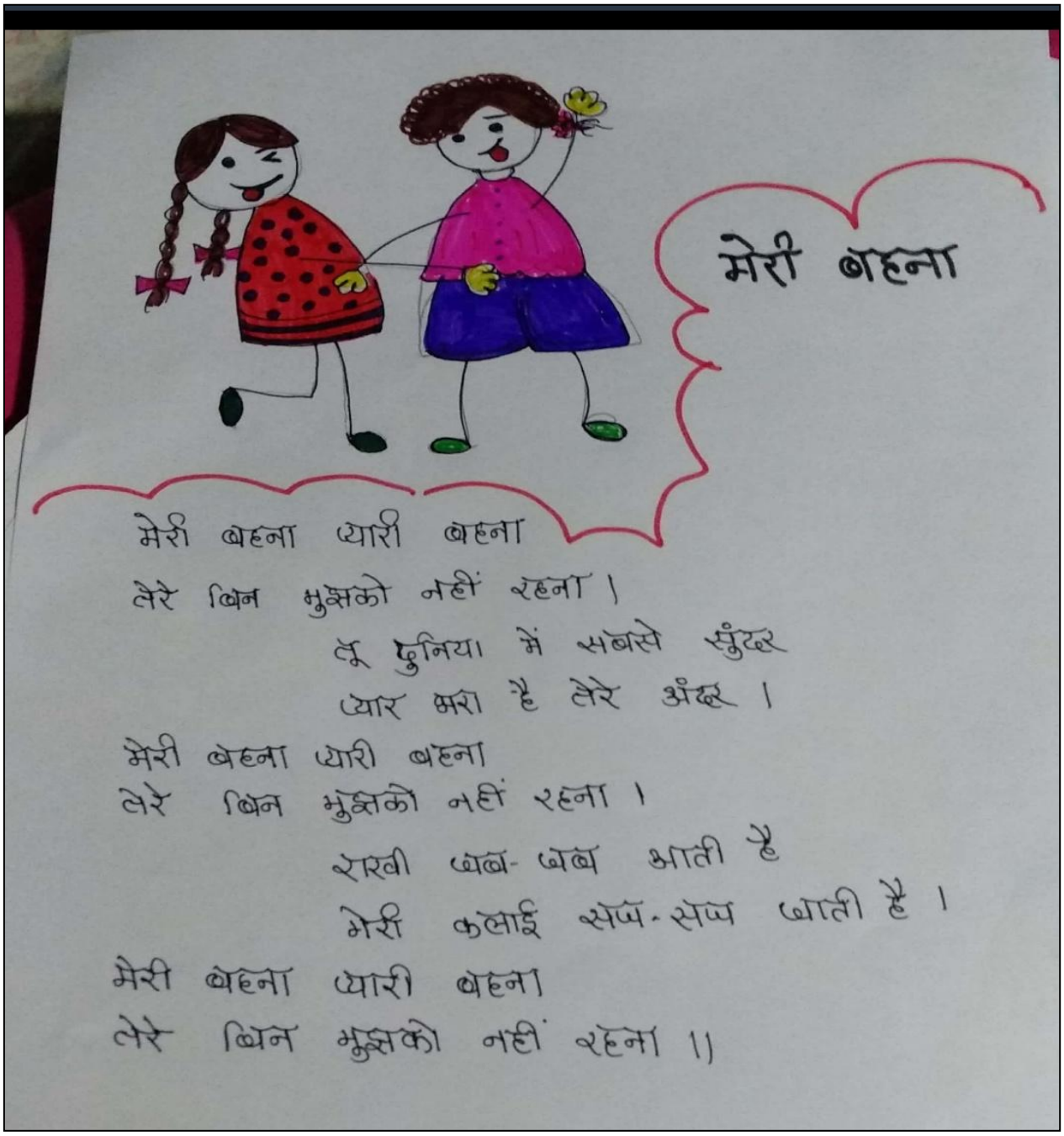

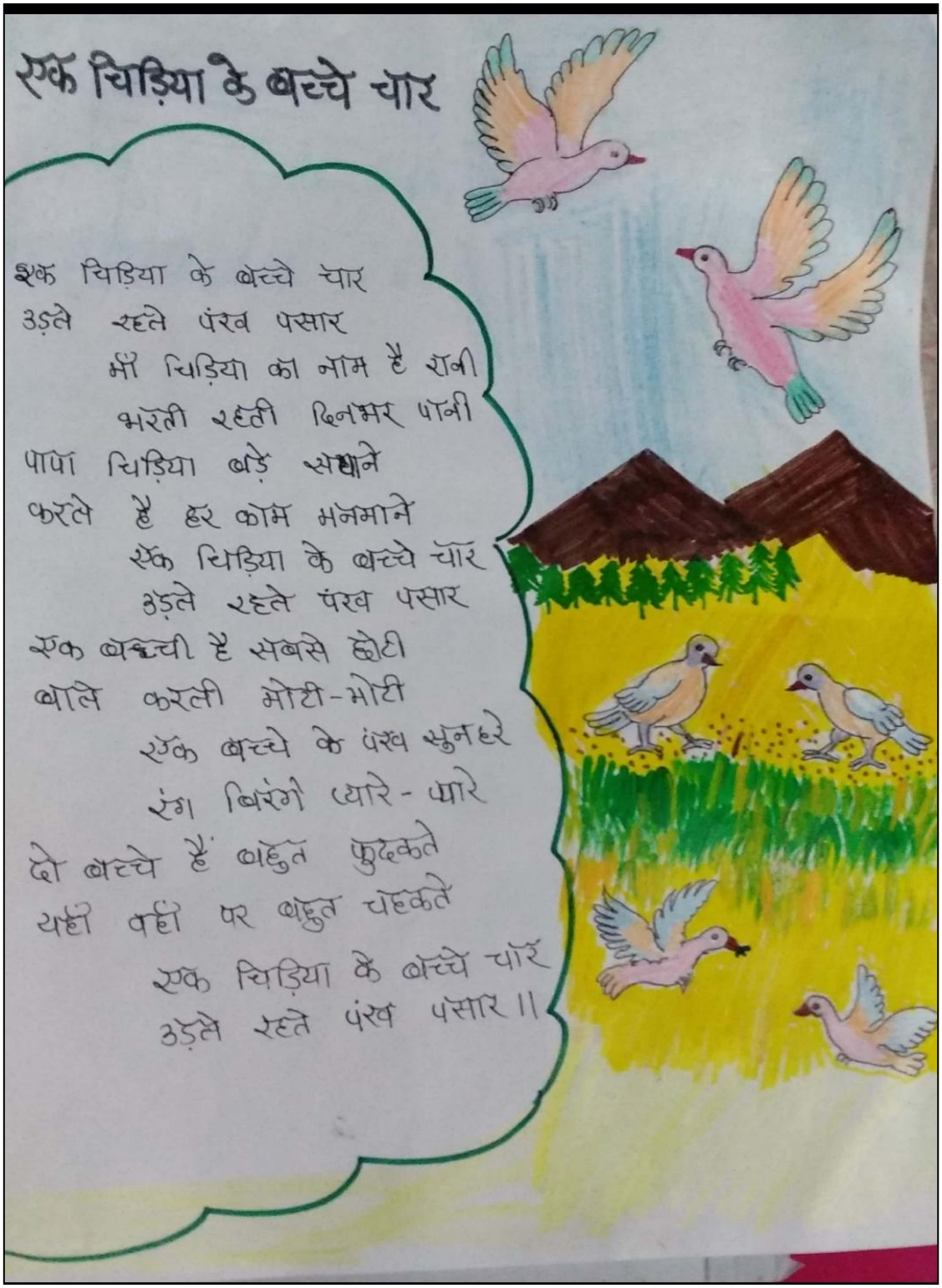

# एक चिड़िया के बच्चे चार

एक चिड़िया के बच्चे चार
उड़ते रहते पंख पसार
माँ चिड़िया का नाम है रानी
भरती रहती दिनभर पानी
पापा चिड़िया बड़े सयाने
करते है हर काम मनमाने
एक चिड़िया के बच्चे चार
उड़ते रहते पंख पसार
एक बच्ची है सबसे छोटी
बातें करती मोटी-मोटी
एक बच्चे के पंख सुनहरे
रंग बिरंगे प्यारे-प्यारे
दो बच्चे हैं बहुत फुदकते
यहाँ वहाँ पर बहुत चहकते
एक चिड़िया के बच्चे चार
उड़ते रहते पंख पसार ॥

## गोपाल की चौपाल

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर विशेष)

लेखक - गोपाल कौशल

माखन मिश्री से भरी थाल
सजा है व्दार और चौपाल ।
आएंगे फोडऩे मटकियां
सखाओं के संग गोपाल ।।

चमक रहा मोती -सा भाल
सारे संकट रहे संभाल ।
आएंगे तोडऩे सारे बंधन
सखाओं के संग गोपाल ।।

प्रेम की बरसती सुरताल
जहाँ विराजते है नंदलाल ।
आएंगे देने गीता उपदेश
सखाओं के संग गोपाल ।।

कंस का बनकर काल
मथुरा को किया खुशहाल ।
आएंगे आज देने आशीष
सखाओं के संग गोपाल ।।

# क्या करूँ ?

लेखक - द्रोण साहू

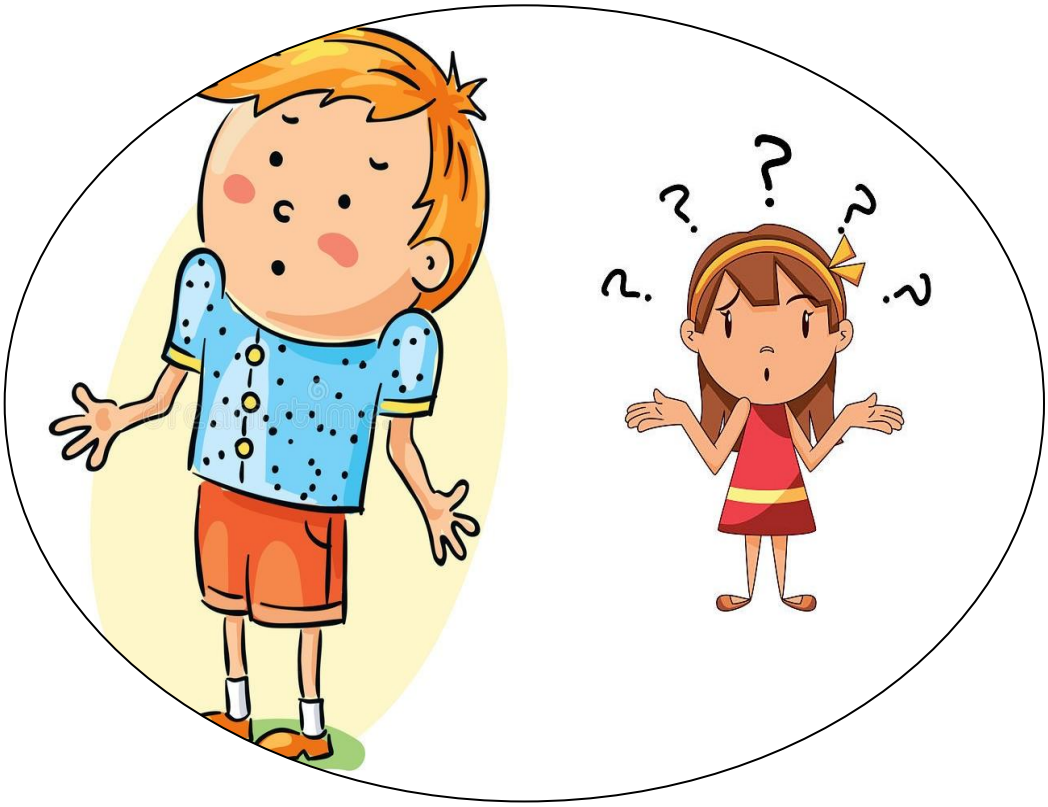

तुम्हें क्या पता पढ़ना सीखने के लिए,

मुझे कहाँ-कहाँ भटकना पड़ रहा है.

एक-एक शब्द को पढ़ने के लिए,

कितनी बार अटकना पड़ रहा है.

मुझे तो पढ़नी है बहुत सी कहानी,

पर वर्ण और मात्रा के ये मेल,

याद दिला रहे हैं, नानी.

क्या करूँ कोई रास्ता दिखाता भी नहीं,

पढ़ते कैसे हैं व्यवस्थित सिखाता भी नहीं.

किसी के कहने पर अब बारहखड़ी में ही,

अपना सिर मुझे पटकना पड़ रहा है.

पढ़ने के लिए क्या -क्या जरूरी है,

कोई यह नहीं बताता,यही तो मजबूरी है.

इसीलिए पढ़ने के इस मकड़जाल में,

अब तक मुझे लटकना पड़ रहा है।

तुम्हें क्या पता.....

## एकता का पाठ

लेखिका - जागृति मिश्रा रानी

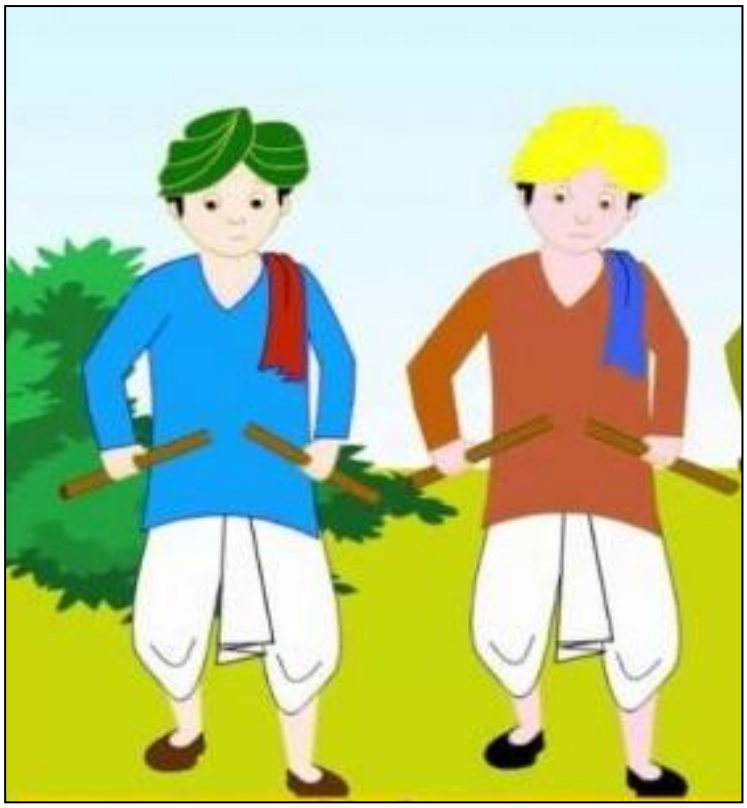

चुन्नू मुन्नू तुम क्यों लड़ते,

बात बात पर क्यों हो अडते।

बोलो क्या ये बात है अच्छी,

झगड़ा करना बात है सच्ची।

बात बहुत है भले पुरानी,

पर मिलती है सीख सुहानी,

दो भाई थे बस तुम जैसे,

लड़ते थे वो भी तुम जैसे।

मम्मी ने दी लकड़ी दोनों को,

कहा पकड़ तोड़ो कोनों को।

अलग-अलग लकड़ी जब पकड़ी,

झट से तोड़ा जैसे ककडी।

बांधा मम्मी ने अब गट्ठा,

अब तोड़ दिखाओ बोली बच्चा।

तरह-तरह की जुगत लगाई,

लकड़ी फिर भी तोड़ ना पाई।

थक कर दोनों बैठ गए फिर,

मुंह दोनों के ऐंठ गए फिर।

सुनो समझ जाओ तुम बच्चों,

नन्हे-मुन्ने मन के सच्चो।

पाठ एकता का तुम पढ़ लो,

जीवन में अपने यह गढ़ लो।

गटठे को तुम तोड़ ना पाए,

एका रहे तो न कोई हराये।

# <u>जैसे को तैसा</u>

लेखिका - कविता कोरी

लाखासर गांव में एक मजदूर टेकराम अपनी पत्नी फूलमती के साथ रहता था. वह बहुत सीधा-सादा और भला आदमी था. फूलमती भी उसी की तरह भोली-भाली थी. दोनों पति-पत्नी घर आए मेहमानों की खूब खातिरादारी करते थे. वे चाहते थे कि मेहमान आएं, मगर एक दो दिन रुककर वापस चले जाएं. मेहमान अगर ज्यादा दिन रुक जाते थे तो गरीब होने के कारण उन्हें परेशानी उठानी पड़ती थी.

एक बार टेकराम का एक दूर का रिश्तेदार अपनी पत्नी तथा बच्चों के साथ दशहरा मनाने उनके यहां आया. टेकराम और फूलमती बहुत खुश हुए. दोनों ने उन लोगों की अच्छी आवभगत की. दशहरे के बाद उन लोगों को वापस लौट जाना था, लेकिन यहां की खातिरदारी देखकर उन लोगों ने दीवाली तक रुकने का मन बना

लिया. अब तो टेकराम और फूलमती सोच में पड़ गए, क्योंकि मेहमान के रूकने से उनके आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगी. एक सप्ताह के बाद भी जब उन लोगों ने लौटने का नाम नहीं लिया तो टेकराम ने एक उपाय सोचा.

अगले दिन खेत जाते समय मजदूर टेकराम ने अपने अपने रिश्तेदार को एक कुदाल और टोकरी पकड़ाते हुए कहा, "भाई साहब, आज हमारे मालिक के यहाँ मजदूरों की कमी हो गई है. जरा आप मेरे साथ खेत पर चलिए. मैं मिट्टी काट काटकर दूंगा और आप उसे खेत से दूर कोने पर डालते जाइयेगा." यह सुनकर टेकराम का रिश्तेदार थोड़ा सकपकाया. चाहकर भी वह इनकार नहीं कर पाया. उसे टेकराम के साथ जाना पड़ा. मिट्टी ढ़ो-ढ़ो कर कुछ ही देर में रिश्तेदार का अंग-अंग दुखने लगा. मारे भूख के पेट में चूहे कूदने लगे. रो धोकर उसे शाम तक मिट्टी उठानी ही पड़ी. उसने फैसला कर लिया कि अब वह यहां एक पल भी नहीं रूकेगा. उसने अपनी पत्नी को वापस चलने की तैयारी करने को कहा तो वह बोली, ''अभी क्या जल्दी है. दीवाली तक रुको ना, कितनी मेहमान नवाजी हो रही है, हमारी यहां.'' उसने मुंह बिगाड़कर कहा, ''मुझे नहीं रुकना यहां, तुम्हें रुकना है तो दीवाली तक रुको. मैं तो कल सुबह ही यहां से चला जाऊंगा.'' सुबह हुई तो रिश्तेदार बिना कुछ खाए पिए ही वहां से चल दिया.

रिश्तेदार की पत्नी बच्चों के साथ अभी भी जमी हुई थी. अगले दिन फूलमती झूठ-मूठ कराहती हुई बोली, ''भाभी! मुझे आज बुखार चढ़ आया है. मैं आज कोई काम न कर सकूंगी, खाना भी नहीं बना सकूंगी.'' रिश्तेदार की पत्नी बोली, ''कोई बात नहीं, तुम आराम करो. मैं खाना बना लेती हूं.'' यह कहकर वह उठी और

रसोई में जाने लगी. ‘‘रूको भाभी,’’ फूलमती ने उसे रोकते हुए कहा. ‘‘खाना बाद में बनाना पहले घर व्दार की झाड़ू से सफाई कर लो, कुछ गंदे कपड़े पड़े हैं, उन्हें भी धो डालना. चालीस किलो गेहूं भी चक्की में पीसना है.’’ रिश्तेदार की पत्नी काम में जुट गई. काम निपटाते निपटाते शाम हो गई. इस बीच वह भूखी प्यासी ही रही. भूख के मारे उसका बुरा हाल हो रहा था. किसी तरह रोते झींकते उसने सारा काम पूरा किया. उसे फूलमती का यह व्यवहार बेहद अखरा. उसने समझ लिया कि अब यहां से जाने में ही भलाई है. अगली सुबह वह बच्चों के साथ जाने लगी तो फूलमती बोली, ‘‘भाभी! मेरी तबीयत खराब है अभी दो चार दिन और रूक जाती तो अच्छा रहता.’’ नहीं, अब मैं यहां नहीं रूकूंगी. मेरा घर जाना बहुत जरूरी है.’’ यह कहकर वह बच्चों के साथ चल दी. मजदूर टेकराम और उसकी पत्नी फूलमती ने चैन की सांस ली.

# कविता में व्याकरण

लेखक - मनोज कश्यप

संज्ञा होती है सदा, किसी वस्तु, स्थान, व्यक्ति का नाम ।

यमुना तट पर रास रचाते, जैसे हो घनश्याम ।।

कार्य करे संज्ञा का, वह सर्वनाम कहलाता है ।

किसका कौन कहाँ मैं और तू, यह सब झूठा नाता है ।।

संज्ञा की विशेषता कहते हो, वे गुण या दूषण ।

छोटा मोटा गुणी श्रेष्ठ, कहलाते सभी विशेषण ।।

क्रिया बताती सदा कार्य का होना हो या करना ।

शाम खेलना किन्तु सुबह उठकर है लिखना पढ़ना ।।

जो विशेषता कहे क्रिया की होता क्रिया विशेषण ।

बहुत शीघ्र जाना है हमको, या दो बढ़िया भोजन ।।

जो सम्बंध बताते वह है संबंधों के सूचक ।

राजा का बेटा चाहे उसकी नियुक्ति हो बेशक ।।

वाक्य शब्द जोड़े काटे जो वही समुच्चय बोधक ।

किशन और राम झगड़े, रखी मेज पर पुस्तक ।।

विस्मय हर्ष आवेगों को जो दर्शाते हैं ।

विस्मय बोधक, हे प्रभु! ओफ! आह! कहलाते है ।

इसीलिए मनोज जी कहते, शब्दो के यह भेद ।

आठ हैं पूरे, गिन कर देखो, शब्दो के यह भेद ।।

# <u>हिन्दी मुहावरे - English Proverb</u>

संकलनकर्ता - श्रीकांत सिंह

| क्र | हिन्दी मुहावरा | English Proverb |
|---|---|---|
| 1 | एक पंथ दो काज | To kill two birds with one stone |
| 2 | जैसे को तैसा | Tit for tat |
| 3 | बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद | A blind man is no judge of colour |
| 4 | दूध का जला छाछ भी फूंक फूंक कर पीता है | A brunt child dreads the fire |
| 5 | पहले तोलो फिर बोलो | Think before you speak |
| 6 | जिसकी लाठी उसकी भैंस | Might is right |
| 7 | जैसा करोगे वैसा भरोगे | As you sow so shall you reap |
| 8 | दुख बिना सुख नहीं | No pains no gains |
| 9 | सांच को आंच नहीं | Truth fears no examination |
| 10 | नीम हकीम खतराए जान | A little knowledge is a dangerous thing |
| 11 | नेकी कर कुएं में डाल | Do good and forget |
| 12 | यह मुंह और मसूर की दाल | First deserve then desire |

# मोर स्कूल

लेखक - अजहरुद्दीन अंसारी

जइसे अँगना म फूले गोंदाफूल संगी, मोर स्कूल ।।

जइसे चंदा कर संगे ताराघुल संगी, मोर स्कूल ।।

खाए बर खाना मिले पिंधे बर कपड़ा ।।

पढे बर पोथी संगी ज्ञान मिले बगरा ।।

कतेक सुघर लागे रेडीयो कर धुन संगी, मोर स्कूल ।।

जइसे अँगना म फूले गोंदाफूल संगी, मोर स्कूल ।।

नान - नान लइका के रमथे पढ़ाई जी ।।

कागज के नाव बने कागज के हवाई जी ।।

बने कागज के आनी-बानी फूल संगी, मोर स्कूल ।।

जइसे अँगना म फूले गोंदाफूल संगी, मोर स्कूल ।।

महूआ के रुख तरी मोर स्कूल गा ।।

गुरुजी डार हवें, लइका हें फूल गा ।।

गाँव गवटिया बनाइन मिल जुइल संगी, मोर स्कूल ।।

जइसे अँगना म फूले गोंदाफूल संगी, मोर स्कूल ।।

जइसे चंदा कर संगे ताराघुल संगी, मोर स्कूल ।।

# स्कूल आ पढ़े बर

लेखक - संतोष कुमार कर्ष

सोनू तै स्कूल काबर नइ आस,

स्कूल म आ के पढ़ ले।

अपन जिंदगी ल गढ़ ले,

सोनू तै स्कूल आना जल्दी।

अनार के दाना हे गोल-गोल,

आमा ल खा के मीठा बोल।

इमली के स्वाद हे खट्टा।

ईख के स्वाद हे मीठा।

सोनू तै स्कूल आना जल्दी.....

उल्लू की आंखी हे गोल गोल,

ऊन के हावय गोला।

ऋषि के नाम हे भोला,

सोनू तै स्कूल आना जल्दी.....

एकतारा ला तेहर बजा ले,

ऐनक पहन के हीरो।

नई पढ़बे त बन जाते जीरो,

अऊ कोनो कति तै मत जा।

स्कूल कति तै जल्दी आ,

सोनू तै स्कूल आना जल्दी.....

ओखली म कुटथे हल्दी,

औरत ल कहिथे माता।

अंगूर खा के मीठे बोल,

अ: करके किताब खोल।

सोनू तै स्कूल आना जल्दी....

जल्दी जल्दी जल्दी।

# मेरे शिक्षक का साथ

लेखक - द्रोणकुमार सार्वा

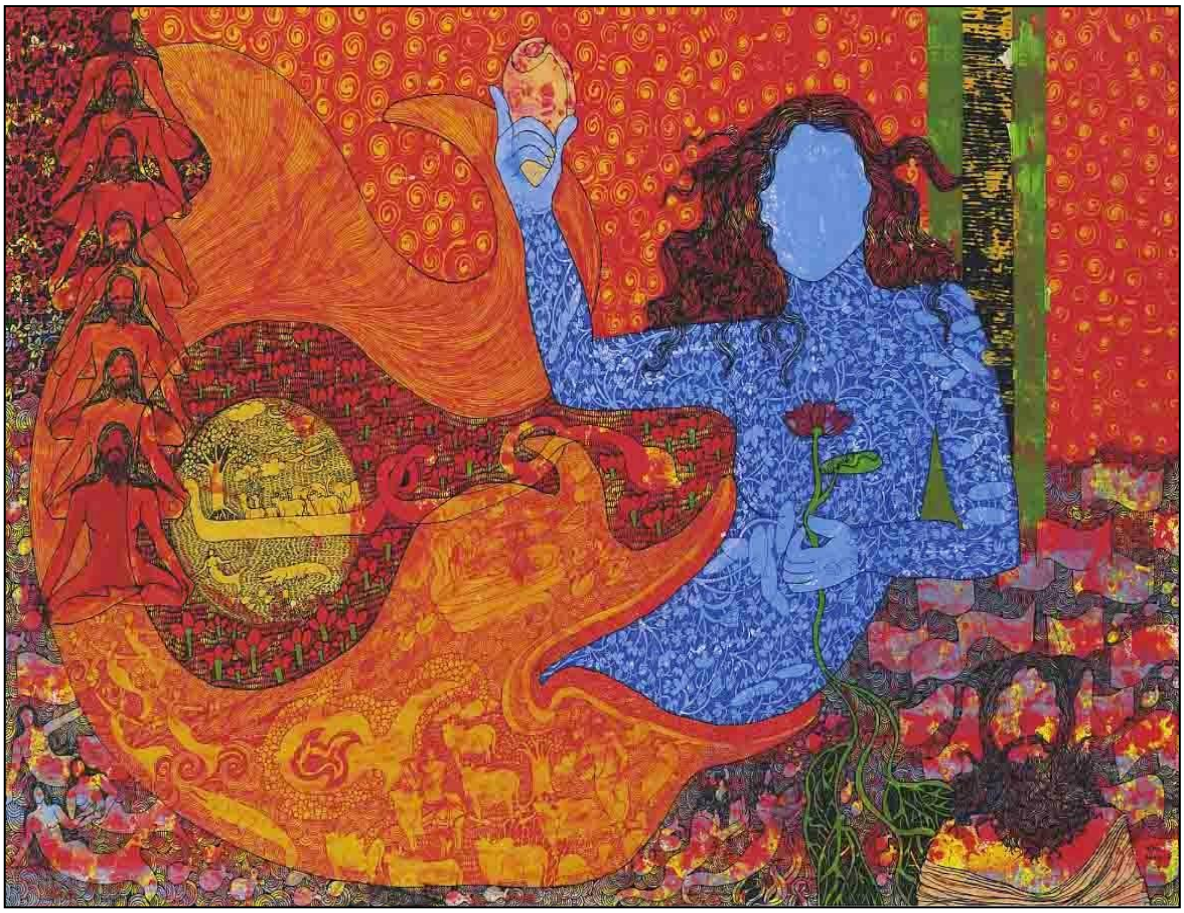

अबूझ लकीर ही थे वे

कुछ बिंदु सरीखे लगते थे

काले पट्टी में श्वेत चाक

बनकर कुछ चित्र उभरते थे

उंगली को मिला सहारा तब

पीठ में अपनेपन की थाप

कुछ लकीरें वर्ण बन गईं

पाकर मेरे शिक्षक का साथ

गूँगा था तब तलक स्वयँ

मन कोरा था ज्ञान बिना

मां की लोरी का मन्त्र ही था

जिससे शब्दों का अहसास मिला

कुछ भाव मेरे भीतर जागे

पर साहस शिक्षा से आया

परी, कहानी, चन्दा मामा

मुनिया दुनिया खूब दिखाया

मंच दिलाकर और निखारा

ताली का वो पहला हाथ

तुतलाते लफ़्ज़ शब्द बन गए

पाकर मेरे शिक्षक का साथ

कभी सख्त हो दिया डांट

कभी सीख की सरल बात

अनगित लम्हो का दौर याद

सृजनदूत वे शिल्पकार

सीधी-सादी जीवनधारा

पर मन मे थे उच्च विचार

ध्वनि घण्टी पर बंधे नियम

समय बोध कर्तव्य पाठ

सुखद हो गया वर्तमान

पाकर मेरे शिक्षक का साथ....

## कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको रामेश्वरी चंद्राकर जी की लिखी अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी. पिछले अंक में दी गई अधूरी कहानी नीचे दी गई है.

एक लड़की थी. उसका पढ़ाई में बहुत मन लगता था पर उसके पापा उसे काम पर भेजते थे. जब वो बोलती थी की मुझे स्कूल जाना है तो उसके पाप कहते थे कि स्कूल नहीं काम पर जाओ. जब उस लड़की ने अपने पापा की बात नहीं मानी और पढ़ने के लिये स्कूल चली गई तो उसके पापा उस लड़की के स्कूल गये और उसकी सहेलियों से कहने लगे की तुम लोगों ने ही इसे बिगाड़ा है. इसके बाद उसके पापा ने उसे स्कूल नहीं जाने दिया बल्कि किसी के घर कम पर भेज दिया. एक दिन उस लड़की की तबीयत ख़राब हो गयी और वह काम पर नहीं गयी. उसके पापा ने उससे पूछा की तुम काम पर क्यों नहीं गयी? उस लड़की ने कहा कि मेरी तबियत ख़राब है इसीलिए मैं काम पर नहीं गयी. यह सुनकर उस लड़की के पापा उसे बहुत मारा.

यह कहानी हमें अनेक लोगों ने पूरी करके भेजी है. उनमें से 2 कहानियां नीचे प्रकाशित की जा रही हैं.

## श्रीमती प्रतिभा पांडेय व्दारा पूरी की गई कहानी

मार खाने के बाद लड़की बहुत रोयी और रोते रोते लेट गयी तभी उसे उसके स्कूल शा प्रा शाला डोंगरीपारा में पढ़ाने वाली मैडम श्रीमती प्रतिभा पांडेय व्दारा रचित छत्तीसगढ़ी  गीत याद आ गया जिसमे "सरकारी स्कूलों" में मिलने वाले लाभो को बताया गया था. और वो गाने लगी -

फीस के चिंता झंन कर पापा, निशुल्क शिक्षा मिलही,

खाना उँहा मिलही और किताब भी ह मिलही,

साईकिल भी ह मिलही, औ ड्रेस भी ह मिलही

कइसे समझाओ पापा तोला..... सरकारी स्कूल भेज दे मोला...

काम ल सिखाही उँहा ,सिलाई सिखाही

समर क्लास लगा के मोला गुणवंतीन बनाही

कैसे समझाऊँ पापा तोला,,, सरकारी स्कूल भेज दे मोल

पढ़े भेज दे मोल..... स्कूल भेज दे मोला.....

रोते रोते वह लड़की सो गयी

इधर उसके पापा उसके इस गीत को सुन रहे थे. उन्होंने मन में विचार किया कि बात तो सही है. जब इतनी सारी सुविधाएं सरकारी स्कूलों में मिल रही हैं, और बच्चो के समग्र विकास पर ध्यान दिया जा रहा है, समर क्लास लगा के नयी नयी चीज़े बनाना और नई नई बाते सिखायी जा रही हैं, फिर मैं क्यों भूल कर रहा हूँ. वे अपनी बेटी के पास गए और उसे गोद में उठा कर गीत के रुप में बोले -

सरकारी स्कूल के फायदा, मैं ह नही तो जानेव,

तोला स्कूल नही भेज के ,भूल तो कर डालेव,

अपन भूल ल मैं ह सुधारहु , मैं ह पढ़हाहू तोला,

मैं ह पढ़हाहू बेटी तोला, सरकारी स्कूल भेजहु तोला।

अपने पापा की बाते सुनकर लड़की खुश हो गयी और रोज ख़ुशी ख़ुशी स्कूल जाने लगी.

शिक्षा -सरकारी स्कूलो में मिलने वाली सुविधाओं को आम जनता तक पहुचाना ताकि बच्चो एवं बालिकाओ को उसका लाभ मिल सके और वे पढ़ लिख सके.

## श्रीमती लक्ष्मी मधुकर व्दारा पूरी की गई कहानी

उस लड़की का नाम आशा था. आशा के स्कूल नहीं आने पर शाम को मधुकर गुरूजी उनके घर आये. उन्होंने आशा की तबीयत के बारे में पूछा. आशा के पापा मनसुख को बाल शिक्षा अधिकार कानून और बाल श्रमिक अपराध के बारे में बताया. गुरूजी ने बताया कि 14 साल से कम उम्र के बच्चों से काम नहीं कराना चाहिए बल्कि उन्हें पढ़ने के लिए स्कूल भेजना चाहिए. मनसुख को गुरूजी की बात समझ आ गई. उसने आशा का इलाज कराया और रोज स्कूल भेजने लगा.

कुछ समय बाद मनसुख की मुलाकात गुरूजी से हुई. तब उसने बताया कि उनकी लड़की डॉक्टर बन गई है. गुरूजी ने मनसुख को बधाई दी. तब उसने गुरूजी को धन्यवाद दिया और कहा कि आपकी ही प्रेरणा से ही मेरी बेटी डॉक्टर बनी है.

अगले अंक के लिये अधूरी कहानी हमें कविता कोरी जी ने लिखकर भेजी है जो हम नीचे दे रहे हैं -

## अधूरी कहानी - मछुआरा

लेखिका - कविता कोरी

एक बड़ा जलाशय था. जलाशय में पानी गहरा होता है, इसलिए उसमें काई तथा मछलियों का प्रिय भोजन जलीय सूक्ष्म पौधे उगते हैं. ऐसे स्थान मछलियों को

बहुत रास आते हैं. उस जलाशय में भी बहुत-सी मछलियां रहती थी. वह जलाशय दूर से आसानी से नजर नहीं आता था.

उस तालाब में तीन मछलियां रहती थीं. उनके स्वभाव भिन्न-भिन्न थे. ईना नामक मछली संकट आने के लक्षण मिलते ही संकट टालने का उपाय करने में विश्वास रखती थी. मिना कहती थी कि संकट आने पर ही उससे बचने का यत्न करो. डिका का सोचना था कि संकट को टालने या उससे बचने की बात बेकार है. करने कराने से कुछ नहीं होता. जो किस्मत में लिखा है, वह होकर रहेगा. एक दिन शाम को मछुआरे नदी में मछलियां पकड़ कर घर जा रहे थे. बहुत कम मछलियां उनके जाल में फंसी थीं, अतः उनके चेहरे उदास थे. तभी उन्हें झाडियों के ऊपर मछलीखोर पक्षियों का झुंड जाता दिखाई दिया. सबकी चोंच में मछलियां दबी थीं.

उन्होने अनुमान लगाया कि झाडियों के पीछे नदी से जुड़ा जलाशय है, जहां बहुत सी मछलियां पल रही हैं. मछुआरे पुलकित होकर झाडियों में से होकर जलाशय के तट पर आ निकले और ललचाई नजर से मछलियों को देखने लगे. एक मछुआरा बोला अहा! इस जलाशय में तो मछलियां भरी पड़ी हैं। आज तक हमें इसका पता ही नहीं लगा. यहां हमें ढेर सारी मछलियां मिलेंगी - दूसरा बोला. तीसरे ने कहा आज तो शाम घिरने वाली है. कल सुबह ही आकर यहां जाल डालेंगे. इस प्रकार मछुआरे दूसरे दिन का कार्यक्रम तय करके चले गए. तीनों मछलियों ने मछुआरे की बात सुन ली थी.

अब आप इस कहानी को पूरा करके हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दीजिये. अच्छी कहानियां हम अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

## चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिये यह चित्र दिया था -

स चित्र पर श्रीमती लक्ष्मी मधुकर की कहानी नीचे प्रकाशित की जा रही है -

### खुशहालपुर

लेखिका - श्रीमती लक्ष्मी मधुकर

खुशहालपुर गांव के सभी किसान और वहां के रहने वाले हमेशा खुशी खुशी जीवन यापन कर रहे थे. वहां मेघ देवता वरुण की बड़ी कृपा थी. वहां कभी सूखा या अकाल नहीं पड़ा था. खुशहालपुर गांव के चारों ओर घने पेड़ों का जंगल था.

कुछ वर्ष बीत जाने के बाद वहां एक कारखाना बनाने वाले आए और पेड़ों की अंधाधुंध कटाई करने लगे. इससे पूरा जंगल नष्ट हो गया. अब की बार वर्षा नहीं हुई. वर्षा के अभाव में गांव सूखाग्रस्त हो गया और अकाल से लोगों का जीना दूभर हो गया. गांव के मुखिया पीतांबर सिंह, गोटिया सज्जन सिंह और गांव के

एकमात्र पढ़े-लिखे गोवर्धन जी ने चौपाल में बैठकर इस समस्या से निपटने के लिए विचार विमर्श किया. उन्होंने फैसला किया कि अधिकाधिक पेड़ पौधे लगाना चाहिए और पानी को रोकने के लिए बांध और तालाब का निर्माण किया जाना चाहिए. इसके लिए लोगों को जागरूक भी करना होगा.

उन्होंने लोगों को जागरुक किया और सरकारी योजना के सहयोग से ढेर सारे पौधे रोपित किए और बहुत से तालाब बनवाए. कुछ वर्षों में फिर से पहले जैसा हरा भरा जंगल बन गया. अब अच्छी वर्षा होने लगी और फसल की पैदावार में वृध्दि हुई. अब फिर से लोगों का जीवन उनके गांव के नाम के अनुसार ही खुशहाल हो गया.

अब आप इस चित्र को देखकर कहानी लिखें और हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दें. अच्छी कहानियां हम किलोल के अगले में प्रकाशित करेंगे.

# गिनती

लेखक - सुबोध कुमार फ्रेंकलीन (आशिक़ रायपुरी)

एक - अब न घुटने टेक
दो - यस, यू केन गो
तीन - दादा की मशीन
चार - अब पड़े न तुमको मार
पाँच - साँच को नहीं आँच
छः - बोलो देश की जै
सात - खाओ कभी न मात
आठ - याद करो पाठ
नौ - जलाओ ज्ञान की लौ
दस - काम से न करो बस

## गणितीय पहेलियां

रचनाकार - दिलकेश मधुकर

(1) मैं तीन अंको की संख्या हूं
जो कि 5,3,9 से मिलकर बनी हूं
मैं इन अंगों से बनने वाली सबसे बड़ी संख्या हूं
उत्तर - 953

(2) मैं दो अंको की संख्या हूं
2 से तो मैं छोटी हूं, पर 40 से बड़ी
मेरा दहाई का अंक इकाई से 2 गुना है
उत्तर - 42

(3) दो अंको की हूं मैं संख्या
उल्टा सीधा एक समान
मुझ में 7 का भाग है जाता
उत्तर - 77

(4) मैं दो अंको की विषम संख्या हूं
उल्टा दो तो छोटी हो जाऊं
मेरा बड़ा अंक मेरे छोटे अंक से 3 गुना है
उत्तर - 31

(5) मैं दो अंको की एक ऐसी संख्या हूं
जो 60 से छोटी हूं
अंको को उल्टा देने से मैं पहले से 36 कम हो जाती हूं
उत्तर - 40

## पहेलियां

रचनाकार - द्रोण साहू

(1) बच्चो,मेरे पास आओ,
मैं हूँ कौन मुझे बताओ
मछली,मेंढक मेरे अंदर,
कमल खिलते कितने सुंदर,
गाँव भर का आऊँ काम,
तीन अक्षरों का मेरा नाम
अब तो मेरा नाम बताओ,
नहीं पता तो नहाने जाओ

उत्तर-तालाब

(2) घास खाऊँ हरी-हरी,
कान मेरे खड़े-खड़े।
नाम बताओ मेरा तुम,
और बनो होशियार बड़े

उत्तर-खरगोश

(3) पंख फैलाकर नाचूँ मैं,
बादल छाए चारों ओर,
दो अक्षर का मेरा नाम,
लोग कहते मुझको.....।

उत्तर- मोर

संदीप राजपूत व्दारा प्रेषित संकलनकर्ता - दीपाली साहू (कक्षा पांचवी प्रा.शा. बरगाही)

(4) धूप से वह पैदा होवे
छांव देख देख मुरझाये
ए री सखी मैं तुझसे पूछूं
हवा लगे तो मर जाये

उत्तर - पसीना

(5) एक कहानी मैं कहूं
तू सुन ले मेरे पूत
बिना परों के वह उड़ गया
बांध गले में सूत

उत्तर - पतंग

(6) घूम घमेला लहंगा पहिने
एक पांव पर रहे खड़ी
आठ हाथ हैं उस नारी के
सूरत उसकी लगे परी

उत्तर - छतरी

## <u>छत्तीसगढ़ी जनउला</u>

संकलनकर्ता - श्रीमती सुभद्रा जगत

1. हल्दी के बूक बक, पीतल के लोटा।
   ए  धंधा ल  नइ जानही, तेला परही सोंटा।।

   उत्तर - बेल

2. तार ऊपर तार, ओमा रेंगय हवलदार।

   उत्तर - मेंकरा (मकड़ी)

3. कच्चा खाबे कच कलिंदर, पक्का खाले छाली।
   ए धंधा नइ जानही, तेहा जाहि डूमरपाली।।

   उत्तर - छिंदी फल

4. चंदा रे चंदा, दूनों पार चंदा।।

   उत्तर - ढोलक

5. एक साल म आए रे गोपी।
   एक गोड़, एक टोपी।।

   उत्तर - पुटू (कुकुरमुत्ता)

6. कोकी  डरवाए, लाली बलाय।।

उत्तर - बोइर(बेर)

7. तरी म मेड़ खुंटा, ऊपर म कोठार ।

उत्तर - पुरइन पान (कमल का पत्ता)

8. कारी गाय करौंदा पिला,
छटके खिला त भागे पिला।।

उत्तर - बंदूक

## सामान्य ज्ञान

## लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने शुरू किया था सर्वानिक गणेशोत्सव

गणेशोत्सव हिंदू पंचांग के अनुसार भाद्रपद मास की चतुर्थी से चतुर्दशी तक दस दिनों तक चलता है. महाराष्ट्र यह त्योहार विशेष रूप से मनाया जाता है. सात वाहन, राष्ट्रकूट, चालुक्य जैसे राजाओं ने गणेशोत्सव की प्रथा चलाई. छत्रपति शिवाजी महाराज भी गणेश की उपासना करते थे. पेशवाओं ने गणेशोत्सव को बढ़ावा दिया. पुणे में कस्बा गणपति की स्थापना राजमाता जीजाबाई ने की थी. पहले गणेश पूजा घर में होती थी. वर्ष 1893 में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने इसे सार्वजनिक रूप दिया. 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, मैं इसे लेकर रहूंगा', की घोषणा करने वाले तिलक महान राष्ट्रवादी नेता थे. तिलक ने इसे केवल धार्मिक कर्मकांड तक ही सीमित नहीं रखा, बल्कि आजादी की लड़ाई, छूआछूत दूर करने, समाज को संगठित करने और आम आदमी के ज्ञानवर्धन करने का उसे ज़रिया बनाया.

इस आंदोलन ने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया. सार्वजनिक गणेशोत्सव से अंग्रेज घबरा गए थे. इस बारे में रोलेट समिति की रिपोर्ट में गंभीर चिंता जताई गई थी. रिपोर्ट में कहा गया था गणेशोत्सव के दौरान युवकों की टोलियां सड़कों पर घूम-घूम कर अंग्रेजी शासन का विरोध करती हैं और ब्रिटेन के ख़िलाफ़ गीत गाती हैं. स्कूली बच्चे पर्चे बांटते हैं, जिनमें अंग्रेजों के खिलाफ हथियार उठाने और शिवाजी की तरह विद्रोह करने का आह्वान होता है.

## मम्मी

लेखिका - कनक लता गेहलोत

मम्मी मेरी आओ ना,
अब तुम देर लगाओ ना,
प्यारी बेटी कहकर मुझको
जल्दी गले लगाओ ना.

मै तो अब भी छोटी हूं,
दिखती थोड़ी मोटी हूं,
सुंदर-सुंदर आंखे मेरी,
तुझ बिन मैं बस रोती हूं.

रोज़-रोज़ जाना तेरा,
मुझको बहुत रुलाता है,
बिन तेरे अब मम्मी मेरी,
मुझको कुछ नहीं भाता है.

छोड़ नौकरी तुम आ जाओ
मम्मी देर लगाओं ना,
मम्मी मेरी आओ ना.

## बाल चित्र

राजेन्द्र प्रसाद यादव व्दारा भेजे गए उनके विद्यार्थियों के बनाये चित्र

## कला - ग्रीटिंग कार्ड बनायें

प्रस्तुतकर्ता - मनोज कश्यप

बच्चों आप थोड़े से पेंट, कार्ड पेपर आदि से सुंदर ग्रीटिंग कार्ड बना सकते हैं. कार्ड पेपर लेकर उसपर अपनी इच्छा से कोई सुंदर सा चित्र बना लो. फिर पेंट और ब्रश लेकर उसमें रंग भर डालो. आप यदि चाहें तो इस कार्ड पर सुंदर वस्तुएं चिपकाकर इसे और अच्छा बना सकते हैं. हमें मनोज कश्यप जी ने शिक्षक दिवस पर उनकी छात्राओं व्दारा बनाये ग्रीटिंग कार्ड के चित्र भेजे हैं. आप देखेंगे कि इस कार्ड में ताजे फूलों का उपयोग भी किया गया है. आप भी ऐसे कार्ड बनाकर अपने मित्रों को उनके जन्मदिन और अन्य त्योहारों पर भेज सकते हैं. देखें कल्पना की उड़ान आपको कहां तक ले जाती है.

# अंक पहेली

इस पहेली में दिये गये संकेत से मिलने वाली संख्या सही जगह पर भरकर हल करना है।

## बाएँ से दाएँ

1. साल में इतने दिन होते है ?
3. एक दर्जन
5. मुझमें जो तुम जोड़ों आठ,बन जाउं मैं पूरे साठ
7. तीन अंक की सम संख्या।पहले दो अंकों से जो संख्या बनती है वह तीसरे अंक का चार गुना है।
9. तीस से बड़ी और सौ से छोटी संख्या।इकाई का अंक दहाई के अंक का तीन गुना है।
10. फरवरी के महीने में इतने दिन है।
11. पाँच सौ से छोटी संख्या। सैकड़ें का अंक दहाई के अंक का दुगुना और दहाई का अंक इकाई के अंक का दुगुना।
13. इतने दांत बड़ों के होते है।
16. जून और नवंबर के महीनों में इतने दिन होते है।
17. चार सौ बीस

## ऊपर से नीचे

1. जनवरी,मार्च,जुलाई में इतने दिन होते है।
2. 600 से 2 दर्जन कम।
4. एक सौ का एक चौथाई।
6. 150 से बड़ी संख्या।दूसरा अंक पहले अंक का दुगुना और तीसरा अंक दूसरे का दुगुना।
7. एक मुहावरा है जो कहता है कि इसमें और 20 में बहुत फर्क है।
8. तीन अंक की सम संख्या हूँ न्यारी,
   सर–पैर बराबर,पेट दुगुना भारी।
9. तीन अंक की संख्या हूँ मै तीनों अंक समान,300 से बड़ी,500 से छोटी,बुझों मेरा मान।
10. दो दर्जन से तीन कम।
12. तीन अंक,तीनों सम। पहले और तीसरे को जोड़ों तो दूसरा मिला है। संख्या 275 से छोटी है।
14. 115 का पांचवा भाग।
15. आधा सौ।

## प्रश्न

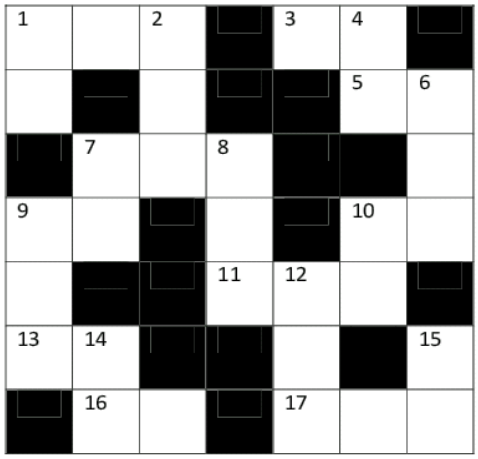

## उत्तर

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | 6 | 5 | ■ | 1 | 2 | ■ |
| 1 | ■ | 7 | ■ | ■ | 5 | 2 |
| ■ | 1 | 6 | 4 | ■ | ■ | 4 |
| 3 | 1 | ■ | 8 | ■ | 2 | 8 |
| 3 | ■ | ■ | 4 | 2 | 1 | ■ |
| 3 | 2 | ■ | ■ | 6 | ■ | 5 |
| ■ | 3 | 0 | ■ | 4 | 2 | 0 |

दिलकेश मधुकर
नवापारा कर्रा
पाली,कोरबा

# आओं हंस लें

एक बहुत ही काला आदमी दुकान पे गया, वो इतना काला था कि कोयला भी शरमा जाये.
उसने दुकानदार से पूछा – भैया गोरा होने की क्रीम है क्या ?
दुकानदार – नहीं है
आदमी – अच्छा तो जूता पॉलिश ही दे दो, कम से कम चेहरे पे चमक तो बनी रहेगी.

टीचर ने पूछा - पिंकी तू कल स्कूल क्यों नहीं आयी थी
पिंकी – मैडम मैं सपने में जापान पहुँच गयी थी
टीचर – बिल्लू तू कहाँ था कल ?
बिल्लू – मैडम मैं पिंकी को एयरपोर्ट पे छोड़ने गया था

माँ – बेटा दादी को बर्थडे पर क्या गिफ्ट दोगे
बेटा – मैं दादी को फुटबॉल दूंगा
माँ – अरे बेटा दादी इस उम्र में फुटबॉल का क्या करेंगी
बेटा – उन्होंने भी तो मेरे बर्थडे पर मुझे भगवत गीता दी थी

पप्पू – मैं कल से बिल्कुल भी स्कूल नहीं जाँऊगा
बापू – क्यों ?
पप्पू –मास्टर जी को कुछ आता ही सारे जवाब मुझसे ही पूछते हैं

## <u>विज्ञान के खेल</u>

सामग्री - एक पारदर्शी गुब्बारा, रंगीन कागज़ के कुछ टुकड़े, एक नायलान का कपड़ा

रंगीन कागज़ को सुंदर आकार के छोटे टुकड़ों में काट लीजिये. एक पारदर्शी गुब्बारा लेकर रंगीन कागज़ के कटे हुए टुकड़ों को उस गुब्बारे में भर लीजिये. इसके बाद गुब्बारे को हवा भर कर फुला लें. एक नायलोन का कपड़ा लेकर उसे गुब्बारे की सतह पर रगड़िये. गुब्बारे में भरे हुए रंगीन कागज़ के टुकड़े गुब्बारे की अंदरूनी सतह पर चिपक जायेंगे और गुब्बारा सुंदर दिखेगा.

इसका कारण यह है कि नायलान के कपड़े से रगड़ने पर गुब्बारे में स्थिर विद्युत बन जाती है और इस विद्युत के आकर्षण से गुब्बारे के अंदर पड़े कागज़ के टुकड़े गुब्बारे की अंदर की सतह पर चिपक जाते हैं.

## भाखा - जनउला - वर्ग पहेली

# रचनाकार - दीपक कंवर

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ■ | ■ | 1 क | | ■ | 2 ज | ■ | 3 घ |
| ■ | ■ | | ■ | 4 ह | | | |
| 5 म | 6 | | ■ | | ■ | ■ | |
| ■ | | ■ | ■ | | ■ | 7 चि | |
| 8 च | | 9 र | ■ | ■ | ■ | | ■ |
| ■ | ■ | | ■ | 10 स | | | ■ |
| 11 ला | ■ | ■ | ■ | | ■ | ■ | 12 |
| | ■ | 13 अ | | | ■ | 14 | |

दाएं से बाएं:- 1 कड़ुआ, 4 हरा, 5 प्लेट, 7 चूजा, 8 चाँवल, 10 साल का पेंड़, 13 अनपड़, 14 मोटा

ऊपर से नीचे:- 1 काला, 2 जड़, 3 घरजमाई ,4 हमारा, 6 नींबू, 7 चिड़िया, 9 रास्ता, 10 सड़ा हुआ, 11 लड्डू, 12 बात

# उत्तर

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ■ | ■ | 1 क | रु | ■ | 2 ज | ■ | 3 घ |
| ■ | ■ | रि | ■ | 4 ह | री | य | र |
| 5 म | 6 ली | या | ■ | म | ■ | ■ | जी |
| ■ | म | ■ | ■ | र | ■ | 7 चि | यां |
| 8 च | उ | 9 र | ■ | ■ | ■ | र | ■ |
| ■ | ■ | द्दा | ■ | 10 स | र | ई | ■ |
| 11 ला | ■ | ■ | ■ | र | ■ | ■ | 12 गो |
| डू | ■ | 13 अ | ड़ | हा | ■ | 14 मो | ठ |